गुप्तकाल में स्त्रियों की स्थिति :-

महरिका नामक विदुषी इस काल में भी पायी गयी। उस समय पर्दा प्रथा नहीं था। धार्मिक तथा सामाजिक उत्सवों में समान रूप से भागीदार हो जाती थी। डा० आर० सी० मजूमदार, जो की एक समाजशास्त्री हैं, उनके अनुसार उच्च कुल कि स्त्रीयां शासन-प्रबंध में भी भाग लेती थीं। और ये ही नहीं, शासन प्रबंधन में उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना जाता था।

इन सभी बातों के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि, पहले की अपेक्षा किन्हीं बातों में स्त्रीयों की दशा गिर गई थी। गुप्तकाल में बाल विवाह प्रचलित थें। शिक्षा से अभिवंचीत होने का यह भी एक कारण था, जो बाल-विवाह से सम्बन्धित था। विधवाओं की अवस्था सोचनीय और विचारणीय थी।

गुप्तकालीन स्मृति ग्रंथ यद्यपि स्त्रीयों को वैदिक शिक्षा देने की अनुमति नहीं दी जाती, ऐसा प्रतित होता है कि उच्च कुलों में इस काल में नारियों को शिक्षा दी जाती थी। वैदिक शिक्षा भले ही वो पायें या न पाएं। आश्रम में रहने वाली कन्याएं इतिहास और पुराण का अध्ययन करती थीं।

अमरकोश में नारि शिक्षिकाओं तथा वैदिक मंत्रों की शिक्षा देने वाली नारियों का उल्लेख किया गया है। उपयुक्त कथन के अनुसार, स्पष्ट है कि प्राचिन भारत में स्त्रीयों की दशा काफी उन्नत थी। लेकिन बाद के समय में, समयानुसार गिरावट देखने को मिलती है।